गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के लिए वित्तीय निवेश एवं व्यय
ब्रिक्स देशों का तुलनात्मक अध्ययन

शिवांगी कुमारी*
आलोक गार्डिया**

शिक्षा के क्षेत्र में विकास के बिना कोई भी देश विकसित देश नहीं बन सकता। वर्तमान में दुनिया बड़े पैमाने पर वैश्विक शिक्षा के विस्तार पर कार्य कर रही है, जो वर्तमान युग की चुनौतियों का सामना करने के लिए तथा मानवता के लिए सबसे शक्तिशाली साधन के रूप में शिक्षा की भूमिका से संबंधित है। यह शोधपत्र दुनिया की तीव्रता से उभरती अर्थव्यवस्थाओं — ब्रिक्स (ब्राजील, रूस, भारत, चीन और दक्षिण अफ्रीका) की वर्ष 2012 से 2022 तक की अवधि में शिक्षा पर किए गए निवेश एवं व्यय को प्रस्तुत करता है, जिसमें ब्रिक्स देशों के बीच प्रति व्यक्ति सकल घरेलू उत्पाद दर, साक्षरता दर तथा शिक्षा पर सकल घरेलू उत्पाद के निवेश एवं व्यय का तुलनात्मक अध्ययन किया गया है। इस शोध अध्ययन में पाया गया कि ब्रिक्स देश अभी भी विकसित देशों से पीछे हैं। प्रति व्यक्ति सकल घरेलू उत्पाद में रूस, चीन और ब्राजील का प्रदर्शन बेहतर है, वहीं भारत व दक्षिण अफ्रीका जैसे विकासशील देश अभी पीछे हैं। शिक्षा पर सकल घरेलू उत्पाद के प्रतिशत की मात्रा में ब्राजील व दक्षिण अफ्रीका अधिक खर्च कर रहे हैं, वहीं चीन सबसे कम खर्च कर रहा है। भारत का शिक्षा पर किए गए व्यय के आँकड़ों को संतोषजनक नहीं माना जा सकता है, क्योंकि ब्रिक्स देशों की तुलना में भारत की साक्षरता दर सबसे कम है। भारत को शत-प्रतिशत साक्षरता दर प्राप्त करने के लिए शिक्षा पर व्यय की वर्तमान दर 4.6 प्रतिशत को बढ़ाने की आवश्यकता है।

शिक्षा मानव पूँजी के घटकों में सबसे बुनियादी घटक माना जाता है। मानव पूँजी और विकास के बीच संबंध पर हुए शोध अध्ययन बताते हैं कि शिक्षा में सुधार का उत्पादकता व उत्पादन जैसे आर्थिक विकास पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है। विभिन्न देशों के शिक्षा पर किए गए निवेश का अध्ययन करने पर पाया गया कि आर्थिक विकास के उच्च स्तर से यह पता चलता है कि उनकी शिक्षा का स्तर भी समान रूप से उच्च है। (एके, 2012) इसलिए गुणवत्तापूर्ण शिक्षा तक पहुँच में सुधार दुनिया भर में कई विकास रणनीतियों की रीढ़ रही है और इस लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए कई सार्वजनिक संसाधनों का निवेश किया गया है। (मिनिन्गौ, 2019) शिक्षा पर किया गया व्यय मूल रूप से एक दीर्घकालिक निवेश है, जिससे किसी देश की उत्पादकता को बढ़ाया जा सकता है। इस प्रकार, शिक्षा दीर्घकालिक आर्थिक विकास का आधार बनती है। विकसित और विकासशील देशों ने अपनी समग्र राष्ट्रीय विकास रणनीतियों में शैक्षिक सुधारों

* *कनिष्ठ शोध अध्येता*, शिक्षा संकाय, बनारस हिंदू विश्वविद्यालय, वाराणसी, उत्तर प्रदेश 221010
** *एसोसिएट प्रोफेसर*, शिक्षा संकाय, बनारस हिंदू विश्वविद्यालय, वाराणसी, उत्तर प्रदेश 221010

को प्राथमिकता दी है। दुनिया भर के देश मानव पूँजी को सक्षम करने के क्रम में शिक्षा में बढ़ोतरी के लिए भारी निवेश कर रहे हैं। (ओवसु-नानटवी, 2015) शिक्षा व्यय विभिन्न शैक्षिक गतिविधियों के लिए आवंटित देश का कुल सरकारी बजट है। (क्वेका और मॉरिससे, 2000)

आर्थिक विकास से जुड़े इतिहासकारों और अर्थशास्त्रियों ने तर्क दिया है कि उन्नीसवीं शताब्दी में विकसित और अविकसित दुनिया के बीच 'महान विचलन' स्कूली शिक्षा में तीव्र गति से सुधार न होकर उन्नत अर्थव्यवस्थाओं के कारण हुआ था। (चौधरी और अन्य, 2012) इस प्रकार, उक्त शोध अध्ययनों के आधार पर शोधार्थी ने निष्कर्षस्वरूप ब्रिक्स देशों में शिक्षा की स्थिति का विश्लेषण कर तुलनात्मक शोध अध्ययन किया।

ब्रिक्स देश, ब्राजील, रूस, भारत, चीन और दक्षिण अफ्रीका मिलकर सकल विश्व उत्पाद का लगभग 22 प्रतिशत हिस्सा बनाते हैं, जिन्हें सामूहिक रूप से तीव्र गति से बढ़ती और उभरती अर्थव्यवस्थाओं के रूप में जाना जाता है। (विश्व बैंक, 2017) इन देशों के साझा दृष्टिकोण और समस्याएँ उन्हें 2010 में एक साथ ले आईं। इन देशों में कई समानताएँ व सामान्य लक्षण (दक्षिण अफ्रीका के अपवाद के साथ) हैं, इनकी अर्थव्यवस्थाओं का उत्कृष्ट आकार, सुदृढ़ विकास दर, विश्व अर्थव्यवस्था, और अंतरराष्ट्रीय शासन संरचनाओं में एक सशक्त राजनीतिक स्वर की माँग इनके महत्व को बढ़ा रही है। (मोराजन और शेफर, 2012) लेकिन अंदर से ये राष्ट्र व्यापक रूप से विविध हैं और इनकी अर्थव्यवस्थाओं में बहुत बड़ा अंतर है। जहाँ एक छोर पर दक्षिण अफ्रीका और दूसरे छोर पर चीन और रूस पूर्व महाशक्ति के रूप में खड़ा है। यह विविधता समूह को और अधिक आकर्षक बनाती है।

ब्रिक्स देशों की आधुनिकता, भौगोलिक एवं सांस्कृतिक परिवर्तनशीलता तथा समूह का राजनीतिक व आर्थिक महत्व, इन देशों की विषम प्रोफाइल की जाँच करना शोध अध्ययन का प्रमुख विषय है। यह शोधपत्र इन देशों के बीच शैक्षिक विकास में निवेश की भूमिका का विश्लेषण प्रस्तुत करता है। संयुक्त राज्य अमेरिका और ब्रिटेन जैसे उन्नत देशों की तुलना में, इन देशों की शुरुआत बीसवीं सदी के अंत में शिक्षा के दुर्बल आधार के साथ हुई थी। इसके अतिरिक्त, विकसित देश उस समय उच्च आय वाले देश थे, जिससे शिक्षा की माँग पैदा हुई और इसके विकास को बढ़ावा मिला, लेकिन ब्रिक्स प्राथमिकता सूची में कम आय वाले नीचे आने वाले देश थे और इसलिए शिक्षा का स्तर कम था। अब ये देश तीव्र गति से बढ़ती अर्थव्यवस्थाओं के रूप में उभरने के साथ-साथ अपने लोगों के बीच शिक्षा की उन्नति के बारे में पहले से कहीं अधिक चिंतित हैं।

अध्ययन का औचित्य

ब्रिक्स देशों और उनकी विश्व अर्थव्यवस्था और राजनीति में बढ़ती आर्थिक प्रासंगिकता को अनदेखा नहीं किया जा सकता है। (कपूर और तिवारी, 2010) ब्रिक्स अर्थव्यवस्थाओं के लिए फॉरेन डायरेक्ट इनवेस्टमेंट (एफ.डी.आई.) डाटा का विश्लेषण करते हुए बताते हैं कि जैसे-जैसे इन देशों को वैश्विक मंच पर महत्व मिलता जाएगा, अंतरराष्ट्रीय समुदाय दुनिया की आर्थिक प्रणाली को स्थिर करने के लिए तीव्रता से अन्य देशों पर ध्यान देगा। अन्य

विकसित देशों के साथ ब्रिक्स की तुलना करते समय यह भी ध्यान में रखना आवश्यक है कि ब्रिक्स ने न केवल बीसवीं सदी में कमजोर शिक्षा आधार के साथ कदम रखा, बल्कि उन्हें कई उथल-पुथल का भी सामना करना पड़ा। चौधरी एवं अन्य (2011) ने पाया कि स्थानीय जातीयता, धार्मिक विविधता, उपनिवेशवाद और दास प्रथा की संस्थागत विरासत जैसे कारक इन देशों की निम्न उपलब्धि को समझाने में मदद करते हैं। वे ब्रिक्स देशों में प्राथमिक शिक्षा के प्रसार के लिए आय, राजनीतिक विकेंद्रीकरण और राजनीतिक दृढ़ता के स्तर को भी महत्वपूर्ण मानते हैं। ज़ोरान (2015) ने शिक्षा पर सार्वजनिक व्यय और देश के सकल घरेलू उत्पाद के मूल्य का अध्ययन किया और पाया कि ब्रिक्स देशों के लिए इन दोनों के बीच एक सकारात्मक संबंध था। किंगडन (2007) ने अंतरराष्ट्रीय परिप्रेक्ष्य, विशेष रूप से ब्रिक्स अर्थव्यवस्थाओं में भारत की शैक्षिक उपलब्धियों का अध्ययन किया और पाया कि युवा साक्षरता के मामले में भारत अन्य ब्रिक्स देशों से पीछे है। भारत में शिक्षा पर सार्वजनिक व्यय के संबंध में कई अध्ययन किए गए हैं (डी और एंडो, 2008, और अराफ, 2016) ताकि यह निष्कर्ष निकाला जा सके कि सरकार शिक्षा वित्त में सक्रिय भूमिका निभा रही है, लेकिन शिक्षा पर सार्वजनिक व्यय, सकल घरेलू उत्पाद के अनुपात में बहुत कम रहा है। हालाँकि, हाल की सरकारी पहल शिक्षा तक पहुँच और नामांकन दरों में सुधार करने में सफल रही है, लेकिन गुणवत्ता काफी कम बनी हुई है। विल्अनिलम (2012) ने पाया कि हालाँकि भारत में सरकारी योजनाएँ प्राथमिक नामांकन दरों को बढ़ाने में सक्षम हैं, लेकिन स्कूल छोड़ने वालों की संख्या अभी भी बहुत अधिक है। रोंग (2011) द्वारा चीन में शोध अध्ययन कर पाया गया कि भले ही चीनी सरकार ने तीव्र गति से सुधार किए हैं और सार्वभौमिक प्राथमिक शिक्षा में तीव्रता से विकास किया है, फिर भी अभी भी बहुत कुछ किया जाना बाकी है। स्पाउल (2013) बताते हैं कि दक्षिण अफ्रीका की शिक्षा प्रणाली सभी मध्यम आय वाले देशों और कई कम आय वाले अफ्रीकी देशों की तुलना में खराब है। हालाँकि विद्यार्थियों के परिणामों के संदर्भ में कुछ सुधार हुए हैं।

आन्यानवू और एरहिजाकपोर (2007) का कहना है कि शिक्षा पर सरकारी व्यय का प्राथमिक और माध्यमिक शिक्षा नामांकन दरों पर सकारात्मक और महत्वपूर्ण प्रत्यक्ष प्रभाव पड़ता है। हालाँकि, वे यह भी तर्क देते हैं कि सार्वजनिक व्यय के अतिरिक्त, राष्ट्रीय आय में वृद्धि, लोकतंत्र का सशक्तीकरण और अंतरराष्ट्रीय सहायता से अफ्रीका में शिक्षा की उच्च मात्रा और गुणवत्ता प्राप्त करने में सहायता मिलेगी। ब्राजील में दुर्बल शिक्षा प्रणाली ब्राजील की अर्थव्यवस्था में असमानता को बढ़ावा दे रही है और दीर्घकालिक नकारात्मक प्रभाव को जन्म देती है इसका यह भी निष्कर्ष है कि शिक्षा सुधार और सकल शिक्षा पर व्यय आर्थिक विकास को बढ़ावा देते हैं। (सैंडोवल, 2012) पोगोसियन (2012) ने सोवियत काल से पहले और बाद के युगों में रूसी शिक्षा प्रणालियों का अध्ययन किया और निष्कर्ष निकाला कि जहाँ सोवियत शिक्षा प्रणाली अलग-थलग थी, वहीं सोवियत के विकास के बाद की रूसी प्रणाली वैश्विक प्रवृत्तियों का अनुसरण कर रही है। प्रत्येक ब्रिक्स देश ने संवैधानिक रूप से सभी के लिए शिक्षा को बुनियादी अधिकार के रूप

में मान्यता दी है। (यूनेस्को, 2014) इसके अतिरिक्त, 'सभी के लिए शिक्षा' (यूनेस्को, 2015) के अनुसार, ब्रिक्स देशों की शिक्षा प्रणाली तीव्र गति से प्रगति कर रही है और 'सभी के लिए शिक्षा' कार्यक्रम के लक्ष्यों को प्राप्त करने में सफल रही है। ब्रिक्स देशों की अर्थव्यवस्थाओं में शैक्षिक विकास का पता लगाने के लिए अतीत में स्वतंत्र रूप से कई अध्ययन किए गए हैं, लेकिन कुछ ही अध्ययनों में तुलनात्मक अध्ययन किया गया। यह शोध अध्ययन ब्रिक्स अर्थव्यवस्थाओं में शिक्षा की स्थिति और शिक्षा पर किए गए व्यय की जाँच से संबंधित है। साथ ही, यह अध्ययन इन सभी घटकों के संबंध में ब्रिक्स देशों के बीच तुलना करने का भी प्रयास करता है।

ब्रिक्स देशों का तुलनात्मक अध्ययन

शोधार्थी द्वारा चित्र 1 में ब्रिक्स देशों की प्रति व्यक्ति सकल घरेलू उत्पाद को स्पष्ट करने का प्रयास किया गया है —

चित्र 1 पिछले एक दशक में ब्रिक्स देशों की प्रति व्यक्ति सकल घरेलू उत्पाद में हुए उतार-चढ़ाव को दर्शाता है। इन आँकड़ों से यह स्पष्ट होता है कि ब्रिक्स देशों की अर्थव्यवस्थाएँ अपने प्रति व्यक्ति सकल घरेलू उत्पाद के स्तर के संबंध में बहुत भिन्न हैं, जहाँ रूस, ब्राजील, चीन और दक्षिण अफ्रीका की अर्थव्यवस्थाओं में पहले से ही प्रति व्यक्ति सकल घरेलू उत्पाद का उच्च स्तर है, वहीं भारत अन्य देशों की तुलना में बहुत निम्न स्तर पर है। भारत और चीन की अर्थव्यवस्थाओं ने इस अवधि में प्रति व्यक्ति सकल घरेलू उत्पाद में सकारात्मक वृद्धि दर्ज की है, वहीं ब्राजील, दक्षिण अफ्रीका और रूस ने नकारात्मक वृद्धि दर्ज की है। 2012 से 2022 तक, 10 वर्षों की अवधि में चीन ने प्रति व्यक्ति सकल घरेलू उत्पाद में 7.3 प्रतिशत तथा भारत ने 5.4 प्रतिशत की वृद्धि दर्ज की है। इस प्रकार, चीन का वृद्धि दर अन्य ब्रिक्स देशों की तुलना में सबसे

चित्र 1 — ब्रिक्स सकल घरेलू उत्पाद प्रति व्यक्ति (अमेरिकी डॉलर)

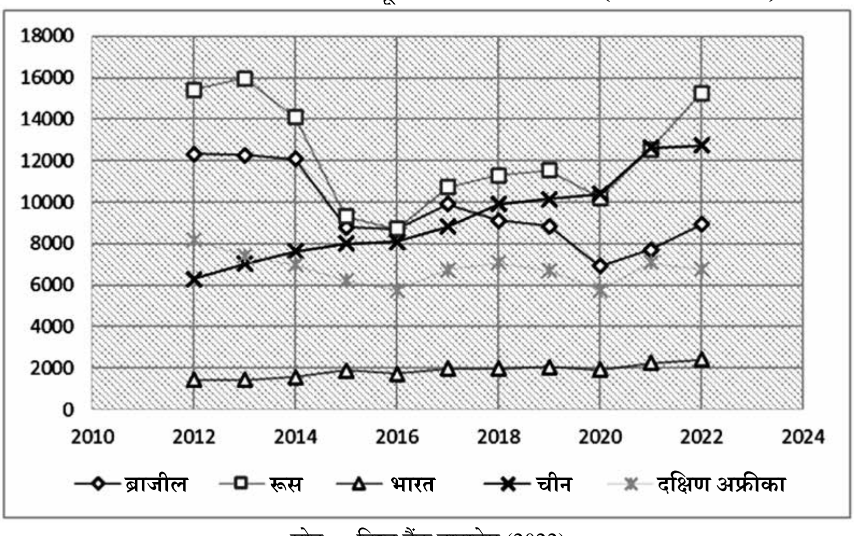

स्रोत — विश्व बैंक डाटाबेस (2022)

अधिक है। रूस, ब्राजील और दक्षिण अफ्रीका में 2012 – 2022 की अवधि के दौरान प्रति व्यक्ति सकल घरेलू उत्पाद में क्रमशः – 0.1 प्रतिशत, –3.2 प्रतिशत और –1.9 प्रतिशत की नकारात्मक वृद्धि देखी गई। इस अवधि के दौरान भारत का प्रति व्यक्ति सकल घरेलू उत्पाद लगभग पाँच गुना हो गया, जबकि चीन में सात गुना से अधिक की वृद्धि हुई, हालाँकि दोनों अर्थव्यवस्थाएँ समान स्तर से शुरू हुईं थी, फिर भी भारत, चीन की तरह अन्य देशों के साथ अंतर को कम करने में विफल रहा। जहाँ चीन विकसित देशों की कड़ी में सम्मिलित होने वाला है (और उन सभी से आगे निकलने वाला है), वहीं भारतीय अर्थव्यवस्था लगातार उनसे पीछे चल रही है।

ब्राजील ने 2012 से 2018 तक के वर्षों में शिक्षा में निवेश के स्तर को थोड़ा बढ़ा दिया है, परंतु 2020 में निवेश के स्तर को कम कर दिया है। ब्रिक्स के अन्य देशों के मुकाबले ब्राजील अपने अनेक क्षेत्रों में शिक्षा में निवेश के उच्चतम स्तर पर है। 2020 में, चीन सरकार ने अपने कुल सकल घरेलू उत्पाद का 5.8 प्रतिशत शिक्षा के लिए आवंटित किया (चीन का राष्ट्रीय सांख्यिकी ब्यूरो, 2017)। विश्व बैंक (2020) के आँकड़ों के अनुसार, सकल घरेलू उत्पाद के संदर्भ में खर्च यह संकेत देते हैं कि शिक्षा में निवेश 2012 में 5.9 प्रतिशत से घटकर 2022 में 5.8 प्रतिशत हो गया, जो – 0.18 प्रतिशत के साथ नकारात्मक वृद्धि को प्रदर्शित करता है। (अवान, 2012; सैंडोवल, 2012; युआन, 2011) के अनुसार, ब्राजील धन की कमी से नहीं बल्कि आवंटित संसाधनों के अनुचित प्रबंधन, शिक्षा हेतु की गई पहलों की असंगत गुणवत्ता और आवश्यक सेवाओं की खराब पहुँच से पीड़ित है। (विश्व बैंक, 2012)

रूस का शिक्षा में निवेश, ब्राजील, भारत और दक्षिण अफ्रीका से कम तथा चीन से अधिक है। 2012 से 2022 के दौरान रूस का शिक्षा पर किए गए व्यय में काफी उतार-चढ़ाव आए हैं। 2018 में

चित्र 2 — ब्रिक्स देशों का शिक्षा पर व्यय (सकल घरेलू उत्पाद प्रतिशत में)

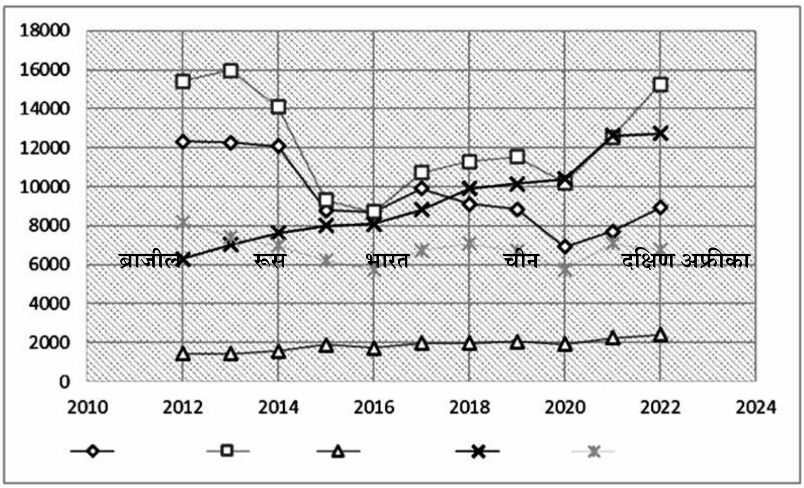

स्रोत — विश्व बैंक डाटाबेस (2022)

निवेश 4.8 प्रतिशत के साथ जहाँ सबसे अधिकतम स्तर पर था वहीं 2019 में 3.5 प्रतिशत के साथ इस दशक के सबसे निचले स्तर पर पहुँच गया। ब्रिक्स देशों की तुलना में रूस में 2012 से 2020 की अवधि के दौरान 0.3 प्रतिशत के साथ सबसे अधिक नकारात्मक वृद्धि दर्ज की गई है। शिक्षा पर किए गए निवेश में इस प्रकार के उतार-चढ़ाव एक बदलती अर्थव्यवस्था और राष्ट्रीय प्राथमिकताओं का संकेतक है। (रोद्रिगुएस, 2018) शिक्षा में निवेश में उतार-चढ़ाव रूसी सरकार द्वारा वृहद मानव पूँजी विकास रणनीति के विकास में निरंतरता की कमी और अन्य को दर्शाता है। (अर्डिचविली एट अल., 2012; युआन, 2011)

रूस की तरह भारत भी शिक्षा पर व्यय में असंगत रुझान दिखाता है। हालाँकि, ये दोलन अधिक तीव्र नहीं हैं, 2012 में 4.1 प्रतिशत से घटकर 2013 में 3.8 प्रतिशत हो गया और फिर 2015 में बढ़कर 4.1 प्रतिशत हो गया, वर्तमान में यह फिर घटकर 4.6 प्रतिशत हो गया है, जो अभी तक का सबसे अधिक खर्च है। ये आँकड़े स्पष्ट करते हैं कि भारत शिक्षा पर व्यय में सकारात्मक वृद्धि दर्ज कर रहा है।

शिक्षा पर किए गए व्यय का देश के विकास पर गहरा प्रभाव है, विशेषकर तब जब भारत वर्तमान में दुनिया की सबसे अधिक आबादी वाला देश है। इसकी आधी आबादी 25 वर्ष से कम उम्र की है और एक तिहाई 15 वर्ष से कम उम्र की है। (विश्व बैंक, 2022; आर्थिक सहयोग और विकास संगठन 2022)

ब्रिक्स देशों में, चीन अब तक प्रशिक्षित और शिक्षित होने वाले लोगों की दूसरी सबसे बड़ी संख्या वाला देश है। 2013 में निवेश 3.7 प्रतिशत था, जो 2020 में घटकर 3.1 प्रतिशत हो गया है।

ब्रिक्स देशों की तुलना में दक्षिण अफ्रीका शिक्षा पर सबसे अधिक खर्च करने वाला देश है। 2019 तक दक्षिण अफ्रीका शिक्षा पर निवेश ब्राजील से कम कर रहा था, परंतु बाद के वर्षों में यह ब्राजील से भी अधिक खर्च करने लगा। शेष सभी ब्रिक्स देशों की तुलना में दक्षिण अफ्रीका ने 1.8 प्रतिशत के साथ सबसे अधिक सकारात्मक वृद्धि दर्ज की है।

चित्र 3 — ब्रिक्स युवा साक्षरता दर, 2022
(आयु प्रतिशत में 15 – 24)

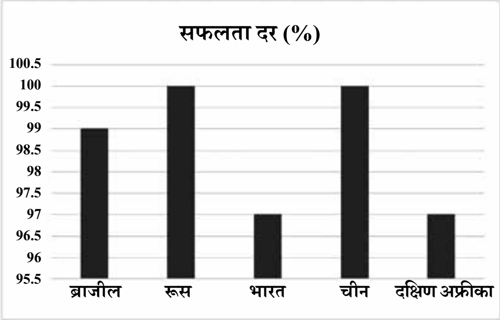

स्रोत — विश्व बैंक डाटाबेस (2022)

चित्र 3 में ब्रिक्स देशों की साक्षरता दर को दर्शाया गया है। इस चित्र के आँकड़ों से यह स्पष्ट होता है कि रूस और चीन 100 प्रतिशत साक्षरता दर को प्राप्त कर चुका है। ब्राजील ने भी 99 प्रतिशत तक साक्षरता दर प्राप्त कर ली है। जबकि भारत और दक्षिण अफ्रीका द्वारा 97 प्रतिशत साक्षरता दर प्राप्त की गई है। इन आँकड़ों के आधार पर यह कहा जा सकता है कि भारत और दक्षिण अफ्रीका को शिक्षा पर अधिक निवेश करने की आवश्यकता है ताकि वे रूस व चीन की तरह 100 प्रतिशत साक्षरता दर के साथ गुणवत्तापूर्ण शिक्षा को प्राप्त कर सकें।

शिक्षा और स्वास्थ्य लोगों के विकास की बुनियादी आवश्यकताएँ हैं तथा यह किसी भी देश के विकासात्मक स्तर को निर्धारित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। लोगों के जीवन स्तर को ऊपर उठाने और गरीबी उन्मूलन के लिए शिक्षा जैसी बुनियादी आवश्यकता को सर्वोच्च प्राथमिकता दी जानी चाहिए। शिक्षा पर व्यय से मानव पूँजी की गुणवत्ता में सुधार होता है। किसी भी अर्थव्यवस्था में उत्पादन वृद्धि के लिए मानव और भौतिक पूँजी निर्माण, दोनों ही आवश्यक हैं। मानव पूँजी निर्माण आधुनिक अर्थव्यवस्था के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है क्योंकि यह भौतिक पूँजी निर्माण का आधार ज्ञान और कौशल आदि का रचनात्मकता स्रोत है। कुशल मानव पूँजी और आर्थिक विकास के बीच सकारात्मक संबंध है। भारत जैसे विकासशील देश में जहाँ विश्व की सबसे बड़ी युवा आबादी निवास करती है, में मानव संसाधनों के समुचित उपयोग की अपार संभावनाएँ हैं। एक शोध अध्ययन में यह व्यापक रूप से स्वीकार किया गया है कि शिक्षा और प्रशिक्षण में निवेश किसी राष्ट्र की निजी और सार्वजनिक उन्नति के साथ जुड़ा हुआ है, निजी उन्नति व्यक्तिगत है और सार्वजनिक उन्नति जनता, समाज और उसकी अर्थव्यवस्था से जुड़े हुए हैं। (कार्नोय और अन्य, 2014; कार्नोय और अन्य, 2012; जोशी और यू, 2014; युआन, 2011)

इस परिप्रेक्ष्य से यह स्पष्ट होता है कि शिक्षा और प्रशिक्षण में किए गए सशक्त वित्तीय निवेश उभरती अर्थव्यवस्थाओं के लिए निरंतर आर्थिक विकास सुनिश्चित करने में प्रमुख चालक की भूमिका निभाते हैं। ब्रिक्स देशों के विश्व बैंक (2022) के आँकड़ों के विश्लेषण के आधार पर यह ज्ञात होता है कि ब्रिक्स देशों में निवेश के स्तर और शिक्षा की गुणवत्ता में सार्थक अंतर है। इस शोध अध्ययन में यह पाया गया कि ब्रिक्स देशों में ब्राजील और दक्षिण अफ्रीका शिक्षा स्तर और खर्च के मामले में बहुत तीव्रता से आगे बढ़ रहे हैं। जबकि चीन और रूस शत-प्रतिशत साक्षरता दर को पा चुके हैं। भारत के आँकड़े चिंतनीय हैं। हालाँकि भारतीय अर्थव्यवस्था दुनिया की पाँचवीं सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था है। इसलिए शिक्षा पर खर्च किया गया सकल घरेलू उत्पाद का एक छोटा-सा हिस्सा भी पूर्ण रूप से बहुत बड़ी धनराशि में परिवर्तित हो जाता है, इसकी विशाल जनसंख्या को ध्यान में रखते हुए अभी और अधिक वित्तीय निवेश एवं संसाधनों की आवश्यकता है। शोधार्थी द्वारा विश्लेषण करने पर पाया गया कि भारत के शिक्षा मापदंडों में उल्लेखनीय वृद्धि हुई है, लेकिन प्रयासों को और तीव्र करने की आवश्यकता है।

निष्कर्ष

शिक्षा पर सार्वजनिक व्यय में निरंतर वृद्धि हो रही है। परंतु यह भी देखा गया है कि भारत में केंद्र व राज्य सरकार अभी भी सकल घरेलू उत्पाद का चार प्रतिशत तक ही खर्च कर रही है। शिक्षा पर अधिक धन खर्च बढ़ाना समय की माँग है। इसलिए शिक्षा में सरकारी निवेश व निजी निवेश को प्रोत्साहित किया जाना चाहिए और विशेष रूप से उच्च शिक्षा में सार्वजनिक व्यय को बढ़ावा देना चाहिए। विश्व गुरु और आत्मनिर्भर भारत जैसे उद्देश्य को पूरा करने

के लिए शिक्षा पर अधिक से अधिक सार्वजनिक व्यय किए जाने की आवश्यकता है। कुल मिलाकर ब्रिक्स अर्थव्यवस्थाओं ने अधिक प्रगति दिखाई है, विशेषकर ब्राजील और दक्षिण अफ्रीका में। यदि अन्य सदस्य देश चाहते हैं कि उनकी अर्थव्यवस्थाएँ और समाज भी प्रगति की और बढ़ें, तो उन्हें भी जल्द ही इसमें शामिल होने की आवश्यकता है। अतः कहा जा सकता है कि ये देश अपने कार्यबल को विकसित करने के लिए रणनीतिक रूप से कैसे निवेश कर रहे हैं? उनकी संभावित बाधाएँ और भविष्य के विकास की योजनाएँ क्या होंगी? साथ ही, ब्रिक्स अर्थव्यवस्थाओं में विकास की अपार संभावनाएँ हैं तथा वे धन और अनुभव साझा करके इस उद्देश्य के लिए एक-दूसरे की सहायता कर सकते हैं। यह उनके पारस्परिक लाभ के लिए है कि सभी सदस्य देश आर्थिक और सामाजिक रूप से विकसित हों ताकि वैश्विक अर्थव्यवस्था और राजनीति में उनके सामूहिक स्वर को बल मिले।

संदर्भ

आन्यानवू, जे.सी. और ए.ई.ओ. एरहिजाकपोर. 2007. एजुकेशन एक्स्पेंडीचर्स एंड स्कूल एनरोलमेंट इन अफ्रीका: इल्लस्ट्रेशंस फ्रम नाइजीरिया एंड अदर एस.ए.एन.ई. कंट्रिस. अफ्रीकन डेवलपमेंट बैंक. *इकोनॉमिक रिसर्च वर्किंग पेपर सीरीज*. नबंर 92. ट्यूनीशया. http://www.afdb.org/

अराफ, टी. 2016. ट्रेंड्स, ग्रोथ एंड चेंजिंग पेटर्न्स ऑफ पब्लिक एक्सपेंडीचर ऑन एजुकेशन इन इंडिया. *जर्नल ऑफ ग्लोबल इकोनॉमिक्स*. जे ग्लोब इकॉन 2016, 4:4. doi: 10.4172/23754389.1000226. फरवरी 2024 को https://www.hilarispublisher.com/open-access/trends-growth-and-changing-patterns-of-public-expenditure-oneducation-in-india-2375-4389-1000226.pdf से प्राप्त किया गया.

ओवुसु-नानटवी, वी. 2015. एजुकेशन एक्स्पेंडीचर एंड इकोनॉमिक ग्रोथ — एविडेन्स फ्रोम घाना. *जर्नल ऑफ इकोनोमिक्स एंड सस्टेनेबल डेवलपमेंट*. 6(16). पृष्ठ 1–6. मार्च 2024 को https://www.researchgate.net/publication/281408797_Education_Expenditures_and_Economic_Growth_Evidence_from_Ghana से प्राप्त किया गया.

इमाद, उद्दीन और रहमत उल्लाह अवान. 2023. डाइनैमिक्स ऑफ एजुकेशन एक्सपेंडीचर, हैल्थ एक्सपेंडीचर एंड इकोनॉमिक ग्रोथ — द केस ऑफ सेलेक्टेड सार्क कंट्रीस, फॉर्मन जर्नल ऑफ इकोनॉमिक स्टडीस, वॉल्यूम. 19(2). पृष्ठ 31 – 51. मार्च 2024 को https://www.fccollege.edu.pk/wp-content/uploads/2.-Dynamics-of-Education-Expenditure-Health-Expenditure-and-Economic-Growth.pdf से प्राप्त किया गया.

किंगडन, जी. जी. 2007. भारत में स्कूली शिक्षा की प्रगति. ई.एस.आर.सी. ग्लोबल पोवर्टी रिसर्च ग्रुप की वेबसाइट से लिया गया. https://archive.ids.ac.uk/eldis/document/A33625.html

कार्नोय, एम. और अन्य. 2012. द इकोनॉमिक रिटर्न्स टू हाइयर एजुकेशन इन द ब्रिक्स कंट्रीस एंड देयर इंप्लीकेशंस फॉर हाइयर एजुकेशन एक्सपेनशन. *हायर स्कूल ऑफ इकोनॉमिक्स*. रिसर्च पेपर नंबर WP BRP 02/EDU/2012। डी.ओ.आई. http://dx.doi.org/10.2139/ssrn.2005696 मार्च 2024 को https://www.hse.ru/data/2012/01/17/1260497875/Martin%20Carnoy,%20Prashant% 20Loyalka,%20Gregory..to%20Higher%20Education%20in%20the%20BRIK.pdf से प्राप्त किया गया.

कपूर, आर. और आर. तिवारी. 2010. एफ.डी.आई. इन द ब्रिक्स — चेंजिंग द इनवेस्टमेंट लैंडस्केप. *द पेर्स्पेक्टिव ऑफ द वर्ल्ड रिव्यू*. 2(2). मार्च 2024 को https://repositorio.ipea.gov.br/bitstream/11058/6350/1/PWR_v2_n2_FDI.pdf से प्राप्त किया गया.

क्लेमेंस, एम.ए. 2004. लॉन्ग वॉक टु स्कूल — इंटरनेशनल एजुकेशन गोल्स इन हिस्टॉरिकल पर्सपेक्टिव. *सेंटर फॉर ग्लोबल डेवलपमेंट*. मार्च 2024 को https://www.researchgate.net/publication/314905502_The_Long_Walk_to_School_International_Education_Goals_in_Historical_Perspective से प्राप्त किया गया.

क्वेका, जे.पी. और मॉरिससी, ओ. 2000. गवर्नमेंट स्पेंडिंग एंड इकोनॉमिक ग्रोथ इन तंज़ानिया, 1965–1996. यूनिवर्सिटी ऑफ नोटिङ्घम, क्रेडिट रिसर्च पेपर. 00/6. पृष्ठ 1–40. मार्च 2024 को https://www.nottingham.ac.uk/credit/documents/papers/00-06.pdf से प्राप्त किया गया.

गुप्ता, दिव्या बुधिया. 2017. ए कम्पैरटिव स्टडि ऑफ बेसिक एजुकेशन पेरामीटर्स फॉर ब्रिक्स एंड देयर रिलेशनशिप विथ एक्सपेंडीचर ऑन एजुकेशन, आई.ओ.एस.आर. *जर्नल ऑफ ह्यूमैनिटीज एंड सोशल विज्ञान* (आई.ओ.एस.आर. – जे.एच.एस.एस.), खंड 22 (9). पृष्ठ 01 – 18. www.iosrjournals.org.

चौधरी, एल. और अन्य. 2012. बिग ब्रिक्स, वीक फाउंडेशन: द बिगनिंग ऑफ पब्लिक एलिमेंट्री एजुकेशन इन ब्राजील, रशिया, इंडिया एंड चाइना. *नेशनल ब्यूरो ऑफ इकोनॉमिक रिसर्च*. कैंब्रिज. फरवरी 2024 को nber.org/system/files/working_papers?w17852/w17852.pdf से प्राप्त किया गया.

जोरान, टी. 2015. अनालिसिस ऑफ द इंपेक्ट ऑफ पब्लिक एक्सपेंडीचर ऑन इकोनॉमिक ग्रोथ ऑफ यूरोपीयन यूनियन एंड ब्रिक्स. *इकोनॉमिक अनालिसिस*. 48(1 – 2). पृष्ठ 19 – 38. मार्च 2024 को https://core.ac.uk/download/pdf/33812219.pdf से प्राप्त किया गया.

जोशी, डी.के. और यू. बिन. 2014. पॉलिटिकल डेटर्मिनेंट्स ऑफ पब्लिक हैल्थ इनवेस्टमेंट इन चाइना एंड इंडिया. *एशियन पॉलिटिक्स एंड पॉलिसी*. 6 (1). पृष्ठ 59 – 82.

पोगोसियन, वी. 2012. रशियन एजुकेशनल पॉलिसी — टू डिफ्रेंट एरास. *इटालियन जर्नल ऑफ सोशियोलॉजी ऑफ एजुकेशन*. 1. मार्च 2024 को https://ijse.padovauniversitypress.it/system/files/papers/2012_1_11_0.pdf से प्राप्त किया गया.

पेलिनेस्कु, ई. 2015. द इंपेक्ट ऑफ ह्यूमन कैपिटल ऑन इकोनॉमिक ग्रोथ, प्रोसीडिया इक्नोमिक्स एंड फाइनेंस, वॉल्यूम 22. पृष्ठ 184 –190. मार्च 2024 को https://www-sciencedirect-com.translate.goog/science/article/pii/S2212567115002580?_x_tr_sl=en&_x_tr_tl=hi&_x_tr_hl=hi&_x_tr_pto=tc से प्राप्त किया गया.

मिनिन्गो, ई. डब्ल्यू. 2019. इफैक्टिवनेस ऑफ एजुकेशन एंड रिविजिटिड: कंट्री-लेवल इंफिशिएनसीस मैटर. *इंटरनेशनल जर्नल ऑफ एजुकेशन डेवलपमेंट*. वॉल्यूम 71. मार्च 2024 को https://doi.org/10.1016/j.ijeduder.2019 से प्राप्त किया गया.

मोरजान, पी. और टी. शेफर. 2012. *द रोल ऑफ ब्रिक्स इन द डेवलपिंग वर्ल्ड, डिरेक्टोरेट-जनरल फॉर एक्सटर्नल पोलिसिस, पॉलिसी डिपार्टमेंट*. मार्च 2024 को http://www.europarl.europa.eu/activities/committees/studies.do?langage=EN से प्राप्त किया गया.

युआन, एस.जे. 2011. एजुकेशनल पोलिसिस एंड इकोनॉमिक ग्रोथ इन ब्रिक्स — कम्पैरटिव् पेर्स्पेक्टिव्स. *जर्नल ऑफ यू.एस. – चाइना पब्लिक एडमिनिस्ट्रेशन*. 8 (2). पृष्ठ 188 – 19. मार्च 2024 को https://www.researchgate.net/publication/295609219_Educational_policies_and_economic_growth_in_BRICs_Comparative_perspectives से प्राप्त किया गया.

यूनेस्को. 2015. एजुकेशन फॉर ऑल. 2015. नेशनल रिव्यू. 2014. नेशनल रिपोर्ट ऑफ द रशियन फेडरेशन ऑन द "एजुकेशन फॉर ऑल". मार्च 2024 को http://unesdoc.unesco.org/images/0023/002307/230799e.pdf से प्राप्त किया गया.

विल्'अनिलम, जे.वी. 2012. डेवलपमेंट ऑफ एजुकेशन इन इंडिया — 1947 – 2012. *योजना*, अगस्त 2012. मार्च 2024 को https://staging.insightsonindia.com/wp-content/uploads/2013/09/development-of-education-in-india.pdf से प्राप्त किया गया.

विश्व बैंक. 2022. *विश्व विकास संकेतक डाटाबेस*. मार्च 2024 को http://data.worldbank.org/indicator/NY.GDP.MKTP.CD?end=2022&locations=BR-RU-IN-CN&start=2000 से प्राप्त किया गया.

सैंडोवल, एल. 2012. द इफैक्ट ऑफ एजुकेशन ऑन ब्राजील्स इकोनॉमिक डेवलपमेंट. *ग्लोबल मेजोरिटी ई-जर्नल*. 3 (1). पृष्ठ 4 – 19. मार्च 2024 को https://www.american.edu/cas/economics/ejournal/upload/sandoval_accessible.pdf से प्राप्त किया गया.

स्पाउल, एन. 2013. *साउथ अफ्रीकास एजुकेशन क्राइसिस — द क्वालिटी ऑफ एजुकेशन इन साउथ अफ्रीका 1994 – 2011*. सेंटर फॉर डेवलपमेंट एंड एंटरप्राइज की वेबसाइट से लिया गया. www.cde.org.za

हनुशेक, एरिक ए. और एल. वोबमन. 2007. द रोल ऑफ एजुकेशन क्वालिटी इन इकोनॉमिक ग्रोथ, वर्ल्ड बैंक पॉलिसी रिसर्च वर्किंग पेपर 4122. जुलाई 2024 को file:///C:/Users/ANITANUNA-ZHK-307/Downloads/The_Role_of_education_quality_for_economic_growth.pdf से प्राप्त किया गया.